''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

JAYOTI VIDYAPEETH WOMEN'S UNIVERSITY, JAIPUR

Faculty of Education & Methodology

Faculty Name - JV'n GIRIJA SHARMA
(Assistant Professor)

Program - M.A III Sem

Course Name - निबंधकार-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

Session No. & Name - **1.1 (**निबंधकार-आचार्य रामचंद्र शुक्य का जीवन परिचय)

PLANNING AND STARTED

(Basic Knowledge For Student)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

हिन्दी आलोचक, कहानीकार, निबन्धकार, साहित्येतिहासकार, कोशकार, अनुवादक, कथाकार और कवि थे। उनके द्वारा लिखी गई सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है हिन्दी साहित्य का इतिहास , जिसके द्वारा आज भी काल निर्धारण एवं पाठ्यक्रम निर्माण में सहायता ली जाती है। हिन्दी में पाठ आधारित वैज्ञानिक आलोचना का सूत्रपात भी उन्हीं के द्वारा हुआ। हिन्दी निबन्ध के क्षेत्र में भी शुक्ल का महत्त्वपूर्ण योगदान है। भाव , मनोविकार सम्बन्धित मनोविश्लेषणात्मक निबन्ध उनके प्रमुख हस्ताक्षर हैं। शुक्ल ने साहित्य के

इतिहास लेखन में रचनाकार के जीवन और पाठ को समान महत्त्व दिया। उन्होंने प्रासंगिकता के दृष्टिकोण से साहित्यिक प्रत्यय एवं रसों की पुनर्व्याख्या की गई।

जीवन परिचय- रामचन्द्र शुक्ल का जन्म **1884** ईस्वी में उत्तर प्रदेश बस्ती जिले के अगोना नामक गाँव में हुआ था। इनकी माता जी का नाम विभाषी था और पिता चंद्रबली शुक्ल की नियुक्ति सदर कानूनगो के पद पर मिर्ज़ापुर में हुई तो समस्त परिवार वहीं आकर रहने लगा। जिस समय शुक्ल की अवस्था नौ वर्ष की थी, उनकी माता का देहान्त हो गया। मातृसुख के अभाव के साथ-साथ विमाता से मिलने वाले दुःख ने उनके व्यक्तित्व को अल्पायु में ही **परिपक्व बना दिया।** अध्ययन के प्रति लग्नशीलता शुक्ल में बाल्यकाल से ही थी। किंतु इसके लिए उन्हें अनुकूल वातावरण न मिल सका। मिर्जापुर के लंदन मिशन स्कूल से **1901** में स्कूल फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण की। उनके पिता की इच्छा थी कि शुक्ल कचहरी में जाकर दफ्तर का काम सीखें , किंतु शुक्ल उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे। पिता जी ने उन्हें वकालत पढ़ने के लिए इलाहाबाद भेजा पर उनकी रुचि वकालत में न होकर साहित्य में थी। अतः परिणाम यह हुआ कि वे उसमें अनुत्तीर्ण रहे। शुक्ल जी के पिताजी ने उन्हें नायब तहसीलदारी की जगह दिलवाने का प्रयास किया गया , किंतु उनकी स्वाभिमानी प्रकृति के कारण यह संभव नहीं हो सका।

1903 से **1908** तक आनन्द कादम्बिनी के सहायक संपादक का कार्य किया। **1904** से **1908** तक लंदन मिशन स्कूल में ड्राइंग के अध्यापक रहे। इसी समय से उनके लेख पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगे और धीरे-धीरे उनकी विद्वता का यश चारों ओर फैल गया। उनकी योग्यता से प्रभावित होकर **1908** में काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने उन्हें हिन्दी शब्दसागर के सहायक संपादक का कार्य-भार सौंपा जिसे उन्होंने सफलतापूर्वक पूरा किया। श्यामसुन्दर दास के शब्दों में शब्दसागर की उपयोगिता और सर्वांगपूर्णता का अधिकांश श्रेय रामचंद्र शुक्ल को प्राप्त है। वे नागरी प्रचारिणी पत्रिका के भी संपादक रहे। **1919** में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक नियुक्त हुए जहाँ श्यामसुंदर दास की मृत्यु के बाद **1937** से जीवन के अंतिम काल **1941** तक विभागाध्यक्ष के पद पर रहे। **2** फरवरी **1941** को हृदय की गति रुक जाने से शुक्ल का देहांत हो गया।

मौलिक कृतियाँ तीन प्रकार की हैं--

आलोचनात्मक ग्रंथ -सूर, तुलसी, जायसी पर की गई आलोचनाएँ , काव्य में रहस्यवाद, काव्य में अभिव्यंजनावाद, रसमीमांसा आदि शुक्ल की आलोचनात्मक रचनाएँ हैं।

निबन्धात्मक ग्रन्थ- उनके निबन्ध चिंतामणि नामक ग्रंथ के दो भागों में संग्रहीत हैं। चिंतामणि के निबन्धों के अतिरिक्त शुक्ल ने कुछ अन्य निबन्ध भी लिखे हैं , जिनमें मित्रता, अध्ययन आदि निबन्ध सामान्य विषयों पर लिखे गये निबन्ध हैं। मित्रता निबन्ध जीवनोपयोगी विषय पर लिखा गया उच्चकोटि का निबन्ध है जिसमें शुक्लजी की लेखन शैली गत विशेषतायें झलकती हैं। क्रोध निबन्ध में उन्होंने सामाजिक जीवन में क्रोध का क्या महत्व , क्रोधी की मानसिकता-जैसै समबन्धित पहलुओं का विश्लेश्ण किया है।

ऐतिहासिक ग्रन्थ- हिंदी साहित्य का इतिहास उनका अनूठा ऐतिहासिक ग्रंथ है। अनूदित कृतियाँ शुक्ल की अनूदित कृतियाँ कई हैं। शशांक उनके द्वारा बंगला से अनुवादित उपन्यास है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अंग्रेजी से विश्वप्रपंच , आदर्श जीवन , मेगस्थनीज का भारतवर्षीय वर्णन, कल्पना का आनन्द आदि रचनाओं का अनुवाद किया। आनन्द कुमार शुक्ल द्वारा "आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का अनुवाद कर्म" नाम से रचित एक ग्रन्थ में उनके अनुवाद कार्यों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

सम्पादित कृतियाँ

सम्पादित ग्रन्थों में हिंदी शब्दसागर , नागरी प्रचारिणी पत्रिका , भ्रमरगीत सार, सूर, तुलसी जायसी ग्रंथावली उल्लेखनीय हैं।